ASTRO ARPITA NATH

वैदिक ज्योतिष में तलाक के सूत्र

Arpita Nath द्वारा · समय एवं फलित · 2026-09-16

यद्यपि वैवाहिक मतभेद (विवाद) या अस्थायी अलगाव को अक्सर धैर्य और गोचर के बदलावों के माध्यम से सुलझाया जा सकता है, परंतु औपचारिक कानूनी विच्छेद (तलाक) जन्म कुंडली (D1), विवाह की सूक्ष्म वर्ग कुंडली (D9 नवांश) और सक्रिय फलित समय-सीमाओं (दशा) में एक स्पष्ट संकेत छोड़ता है।

वैदिक ज्योतिष में, कानूनी तलाक तब घटित होता है जब प्राथमिक संबंध अक्ष (रिलेशनशिप एक्सिस), पारिवारिक सौहार्द और काम-इच्छा का कारक ग्रह अत्यधिक पापी प्रभाव के अधीन आते हैं, जो प्रतिकूल दशा और गोचर के ट्रिगर्स द्वारा एक साथ सक्रिय होते हैं।

1. जन्म कुंडली (D1) में मुख्य भावों की पीड़ा

तलाक न केवल जीवनसाथी को प्रभावित करता है, बल्कि पारिवारिक वंश, घरेलू शांति और भावनात्मक संतुलन पर भी प्रभाव डालता है:

7वें, दूसरे, चौथे और 12वें भाव की पीड़ा:
• **7वां भाव**: प्राथमिक वैवाहिक अनुबंध और जीवनसाथी की उपस्थिति।
• **दूसरा भाव**: पारिवारिक एकता, संयुक्त वित्त और घरेलू स्थिरता (7वें से 8वां भाव)।
• **चौथा भाव**: घरेलू शांति, मानसिक सुख और साझा घर।
• **12वां भाव**: अंतिम अलगाव, शारीरिक दूरी और वैवाहिक बंधन की कानूनी समाप्ति (व्यय)।

• **7वें भाव में राहु:** तीव्र भ्रम, संबंधों से अवास्तविक अपेक्षाएं, निरंतर गलतफहमियां या लीक से हटकर आचरण के कारण लंबे कानूनी विवाद उत्पन्न करता है।

• **7वें भाव में केतु:** पूर्ण भावनात्मक विरक्ति, सुन्नता, उदासीनता और वैवाहिक दायित्वों में रुचि बनाए रखने में असमर्थता उत्पन्न करता है, जिससे संबंध का शांत रूप से त्याग हो जाता है।

2. शुक्र (नैसर्गिक कारक) की पीड़ा

शुक्र समझौता करने, प्रेम करने और वैवाहिक आनंद का अनुभव करने की वास्तविक क्षमता का प्रतिनिधित्व करता है:

• **नीच, अस्त, या अत्यधिक पीड़ित शुक्र:** जब शुक्र नीच (कन्या राशि में) हो, सूर्य की निकटता से अस्त हो या नैसर्गिक पापी ग्रहों (मंगल, शनि, राहु या केतु) के साथ कठोर युति/दृष्टि में फंसा हो, तो स्नेह की जगह कड़वाहट या शत्रुता ले लेती है।

• **दुस्थान भावों (6ठे, 8वें या 12वें) में शुक्र**: विशेष रूप से जब पापी दृष्टि प्राप्त हो, 6ठे भाव में शुक्र वैवाहिक बंधन को मुकदमेबाजी में खींचता है; 8वें भाव में यह विश्वासघात या अचानक टूटन को जन्म देता है; 12वें भाव में यह स्थायी भावनात्मक और शारीरिक अलगाव में विलीन हो जाता है।

3. नवांश कुंडली (D9) का सत्यापन

नवांश कुंडली वैवाहिक भविष्य की अंतिम निर्णायक होती है। यदि D1 कुंडली तनाव का संकेत देती है, तो D9 कुंडली यह निर्धारित करती है कि विवाह टिकेगा या कानूनी रूप से टूटेगा:

• **D-9 का 7वां भाव या 7वें भाव का स्वामी दुस्थान में स्थित होना:** जब नवांश कुंडली में 7वें भाव का आरंभ बिंदु (कस्प) या उसका स्वामी D9 के 6ठे, 8वें या 12वें भाव में चला जाता है, तो आत्मा में संबंध को बनाए रखने के कार्मिक धैर्य का अभाव होता है।

• **D9 के लग्न या 7वें भाव को प्रभावित करने वाले पापी ग्रह:** नवांश में पहले या 7वें भाव में स्थित या उन पर सीधी दृष्टि डालने वाले पापी

ग्रह (शनि, मंगल, राहु, केतु, सूर्य) दंपत्ति के बुनियादी सौहार्द को छिन्न-भिन्न कर देते हैं।

• **D-9 में शुक्र का नीच या पीड़ित होना:** यदि शुक्र अपनी नीच राशि में चला जाए या नवांश कुंडली के भीतर भारी पापी पीड़ा झेले, तो प्रेम को बनाए रखने की आंतरिक क्षमता भीतर से समाप्त हो जाती है।

4. दशा और गोचर के ट्रिगर्स (घटना का प्रकटीकरण)

एक कुंडली में दशकों तक तलाक के प्रसुप्त योग रह सकते हैं, परंतु वास्तविक घटना को घटित करने के लिए अलगाव को सक्रिय करने वाले समय-संकेतकों (दशा-गोचर) की आवश्यकता होती है:

दुस्थान भावों के स्वामियों की दशा: कानूनी कार्यवाही और अंतिम फैसला आमतौर पर 6ठे भाव (अदालती मामले/मुकदमेबाजी), 8वें भाव (अचानक आघात/तलाक का समझौता) या 12वें भाव (हानि और विदाई) में स्थित या उनके स्वामी ग्रहों की महादशा, अंतर्दशा या प्रत्यंतर्दशा के दौरान अंतिम रूप लेते हैं।

संबंध अक्ष पर अलगावकारी गोचर: शारीरिक विच्छेद तब प्रेरित होता है जब शनि, राहु या केतु निम्नलिखित स्थितियों से गोचर करते हैं:
• जन्मकालिक 7वें भाव से।
• जन्मकालिक 7वें भाव के स्वामी की राशि/अंश के ऊपर से (या उस पर घनिष्ठ दृष्टि डालते हुए)।
• जन्मकालिक शुक्र के साथ युति में।

तलाक के लिए नैदानिक चेकलिस्ट

1. पीड़ित भावों की गणना करें: क्या मूलभूत भावों (दूसरे, चौथे, 7वें, 12वें) में से कम से कम तीन भाव नैसर्गिक पापी ग्रहों से अत्यधिक प्रभावित हैं?

2. शुक्र का परीक्षण करें: क्या शुक्र अस्त, नीच, दुस्थान में स्थित या मंगल/शनि/राहु-केतु से युत है?

3. D9 की जांच करें: क्या D9 का 7वां स्वामी नवांश के 6ठे, 8वें या 12वें भाव में स्थित है?

4. ट्रिगर समय की पहचान करें: क्या जातक 6ठे/8वें/12वें भाव से जुड़ी दशा से गुजर रहा है, जबकि शनि, राहु या केतु 7वें भाव या शुक्र से गोचर कर रहे हैं?

https://astroarpitanath.com/hindi/sutras-for-divorce/
ज्योतिष केवल मार्गदर्शन के लिए प्रदान किया जाता है। जीवन के महत्वपूर्ण निर्णयों के लिए, कृपया किसी योग्य पेशेवर से परामर्श लें।